राज्य की उत्पति : विविध सिद्धान्त
(origin of the state : Different theories)

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास राज्य के अस्तित्व के साथ जुड़ा है। परंतु मनुष्य शुरू से सभ्य नहीं था। अतः यह मान सकते है कि शुरू-शुरू मे राज्य नहीं था। अतः यह राज्य की उत्पति कैसे हुई। इस बारे मे कोई सर्वसम्मत सिद्धान्त नहीं है। विचारको ने कोरी कल्पना के आधार पर राज्य की उत्पति के सिद्धान्त प्रस्तुत किए है। हालांकि आज के युग में केवल उन्हीं बातों को स्वीकार किया जाता है जिनके वैज्ञानिक या तर्कसंगत आधार प्रस्तुत किए जा सके। राज्य की उत्पति के अनेक सिद्धान्त राज्य की शक्ति के आधार, राज्य के उद्देश्य व्यक्ति के राजनीतिक दायित्व, इत्यादि की व्याख्या देने के ध्येय से प्रस्तुत किए गए है।

राज्य की दैवी उत्पति का सिद्धान्त
(Theory of divine origin of the State)

यह एक काल्पनिक सिद्धान्त है। देखा जाए तो यह राज्य की उत्पति को समझने मे विशेष सहायता नहीं देता। इसका मुख्य ध्येय राज्य की शक्ति के दैवी आधार की पुष्टि करना है। जिसके लिए यह राज्य की दैवी उत्पति की कल्पना का प्रयोग कर लेता है।

यूरोपीय परंपरा में → राज्य की दैवी उत्पति का सिद्धान्त राजतंत्र (Monarchy) के युग में विकसित हुआ। इसका ध्येय यह सिद्ध करना था कि राजा के अधिकार दैवी अधिकार है।

सामाजिक अनुबंध की अवधारणा
(Notion of the social contract)

उदारवादी विचारक राज्य को एक ऐसी संस्था मानते है, जिसे सब मनुष्यों या उनके समूहों ने मिलकर अपने